राघवोल्लासमहाकाव्य का छन्दोविधान

मनीष कुमार त्रिपाठी*

अद्वैतयति प्रणीत राघवोल्लास महाकाव्य का सम्पादन राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के गंगानाथ झा परिसर से वर्ष 2011 में डॉ0 रामकिशोर झा ने किया है। बाल्मीकीय रामायण को उपजीव्य मानकर लिखे गये इस महाकाव्य में कुल बारह सर्ग हैं जिसमें राम जन्म से लेकर राम–सीता विवाह पर्यन्त अयोध्या प्रत्यागमन तक की कथा वर्णित है। यद्यपि अद्वैतयति ने पूर्वदृश्य के रूप में प्रारम्भिक तीन सर्गों में रामवनगमन का दृश्य उपस्थित किया है, तत्पश्चात् रोती हुई माता कौशल्या के मुख से सुमित्रा के प्रति सम्पूर्ण कथानक को कहलाया है। अद्वैतयति द्वारा इस प्रकार प्रचलित रामकथा को अपनी काव्यप्रतिभा के सामर्थ्य से रोचकता प्रदान की गई है। इस प्रकार मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम के उल्लासमय पक्ष को उद्घाटित करने वाले इस महाकाव्य का नामकरण सार्थक ही है।

डॉ0 रामकिशोर झा जी के द्वारा 'राघवोल्लासमहाकाव्य' के सम्पादन से पूर्व इस महाकाव्य के विषय में विभिन्न इतिहास–ग्रन्थों में इसके विषय में संक्षिप्त सूचनायें प्राप्त होती हैं। जिनसे प्राप्त जानकारी तथा कतिपय अन्य साक्ष्यों के आधार पर यह महाकाव्य सोलहवीं शताब्दी का निर्णीत होता है। और भी अधिक रोचक तथ्य यह है कि इसकी रचना 'रामचरितमानस' के समानान्तर काल में तथा वाराणसी में ही हुई है। इस प्रकार इतने दीर्घावधि तक दुर्लभ इस महाकाव्य के प्रकाशन के पश्चात् इसके काव्यशास्त्रीय पहलुओं की चर्चा आवश्यक हो जाती है। प्रस्तुत शीर्षक के अन्तर्गत राघवोल्लास महाकाव्य के छन्दोविधान को दृष्टिगत रखकर विचार किया गया है।

षड्वेदांगों में छन्दशास्त्र भी एक है जिसके प्रवर्तक 'भगवान शिव माने जाते हैं। भगवान शिव से सर्वप्रथम छन्दोज्ञान देवगुरु वृहस्पति ने प्राप्त किया। वृहस्पति से इन्द्र और इन्द्र से माण्डव्य नामक ऋषि ने प्राप्त किया। सनत्कुमार को छन्दशास्त्र का ज्ञाता स्वीकार किया गया है। वेदमन्त्रों की विशुद्धता और उसकी लयबद्ध गति के ज्ञान के लिए छन्दशास्त्र की आवश्यकता होती है। वेदमन्त्र छन्दबद्ध हैं, जिनके उच्चारण की गतिविधि बिना छन्दशास्त्र का ज्ञान प्राप्त किये

शोधच्छात्र राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान गङ्गानाथ झा परिसर इलाहाबाद

नहीं की जा सकती है और अनुचित उच्चारण से समुचित फल की प्राप्ति नहीं हो सकती। इसी कारण छन्दशास्त्र के अध्ययन पर बल दिया गया है।

व्याकरणानुसार 'छन्द' शब्द का कई प्रकार से निष्पत्ति की गयी है। रुचिकर और श्रुतिप्रिय लयबद्ध वाणी ही छन्द है–''छन्दयति पृणाति रोचते इति छन्दः''। इसके अतिरिक्त ''छन्दयति आह्लादयति छन्द्यन्तेऽनेन वा छन्दः'' अर्थात् जिस वाणी को सुनते ही मन आह्लादित हो जाता है, वह छन्दमयी वाणी ही वेद है। छन्द को एक ऐसे कवच के रूप में भी स्वीकार किया गया है, जिसके द्वारा वेदमन्त्र असुरों के हस्तक्षेप से सुरक्षित रह सकें। ''छादयति मन्त्रप्रतिपाद्ययज्ञादीन् इति छन्दः'' अर्थात् असुरों की विघ्नबाधाओं से यज्ञादि कर्मों को एवं वैदिक अनुष्ठानों की रक्षा करता है, वही छन्द है।

कवि की तन्मयता छन्द को जन्म देती है। आदिकवि की शोकाकुल वाणी छन्द के माध्यम से ही अभिव्यक्त हुई थी। विभिन्न रसों की व्यंजना के लिए लौकिक संस्कृत साहित्य में विभिन्न छन्दों का विधान किया गया है। वैसे तो वैदिक ऋचायें भी छन्दोबद्ध हैं किन्तु उनमें रस और भाव का नियन्त्रण नहीं है। यह कहना कठिन है कि किसी भाव–विशेष के लिए अनुष्टुप् और दूसरे के लिए गायत्री का विधान है। किन्तु अश्वघोष, कालिदास प्रभृति संस्कृत कवियों की काव्य–रचना का निरीक्षण किया जाय तो यह अवश्य ही प्रतीत होता है कि उन्होंने किसी छन्द–विशेष को समझ–बूझकर किसी भाव–विशेष के अभिव्यंजनार्थ प्रयुक्त किया है। इस विषय पर अनुसन्धानकर्त्ताओं की दृष्टि सामान्य रूप से ही पड़ी है। यह प्रतीत होता है कि प्रत्येक छन्द के प्रयोग में कवि का मनोविज्ञान मुखर हो उठता है।

काव्य में रस–सिद्धि के लिए जिस प्रकार समुचित शब्दयोजना की आवश्यकता होती है उसी प्रकार छन्दोयोजना उतनी ही अधिक अपेक्षित है। महाकवि क्षेमेन्द्र ने अपने सुवृत्ततिलक में इसी सन्दर्भ में कहा है–

प्रबन्धः सुतरां भाति यथास्थानं निवेशितैः।
निर्दोषैर्गुणसंयुक्तैः सुवृत्तैर्मौक्तिकैरिव।।
काव्ये रसानुसारेण वर्णनानुगुणेन च।
कुर्वीत सर्ववृत्तानां विनियोगं विभागवित्।। सुवृत्ततिलक, 3.1,7

अर्थात् काव्य में विवेकशील कवि को रस एवं वर्णनीय वस्तु के अनुसार सभी छन्दों का सम्यक् प्रयोग करना चाहिए। क्षेमेन्द ने विभिन्न छन्दों का सम्बन्ध विभिन्न भावों तथा वर्णनों के साथ दिखलाया है। उदाहरणार्थ अनुष्टुप छन्द का प्रयोग कथा–विस्तार करने में, उपदेश या वृत्तान्त के कथन में प्रशस्त होता है। इसी प्रकार श्रृंगार के आलम्बन स्वरूप नायिका के रूपवर्णन में तथा वसन्त आदि के वर्णन में उपजाति छन्द का प्रयोग होता है। वर्षा, प्रवास, विपत्ति आदि के वर्णन

में मन्दाक्रान्ता, राजाओं के शौर्य की स्तुति में शार्दूलविक्रीडित तथा आँधी–तूफान आदि के वर्णन में स्रग्धरा ठीक है। इसी प्रकार विविध छन्दों के विषय में एक नियम होना चाहिए जिससे कवियों को उचित मार्गदर्शन हो।

महाकाव्य के नियम के अनुसार सामान्यतया एक सर्ग एक ही छन्द में होता है, केवल सर्गान्त में ही छन्द का परिवर्तन अपेक्षित है। कुछ सर्गों में विभिन्न छन्दों का प्रयोग हो सकता है। किन्तु यह तभी हो सकता है जब उस सर्ग में भावों का वैविध्य हो, घटनाक्रम तीव्र गति को प्राप्त कर रहा हो, अतएव विभिन्न छन्दों का आग्रह हो। इससे स्पष्ट है कि सामान्यतया सर्गों में किसी एक भाव का ही आद्योपान्त निरूपण होता है और उसके लिए समर्थ छन्द का उपयोग होना चाहिए।

यद्यपि लक्षणकारों द्वारा एक सर्ग में एक ही छन्द का प्रयोग होना बतलाया गया है किन्तु राघवोल्लासमहाकाव्य के लगभग सभी सर्गों में अनेक छन्दों का प्रयोग किया गया है। महाकाव्यों में इस प्रकार की स्थिति को देखते हुए ही आचार्य विश्वनाथ ने भी साहित्यदर्पण में स्पष्ट किया है–

'नानावृत्तमयः क्वापि सर्गः कश्चन् दृश्यते'(सा0द0)

जहाँ तक राघवोल्लास महाकाव्य में अद्वैतयति के छन्दोज्ञान अथवा छन्दोप्रियता का प्रश्न है, वे छन्दशास्त्र के पूर्ण ज्ञाता प्रतीत होते हैं। उन्होंने अपने काव्य में विभिन्न छन्दों का प्रयोग किया है, जिसका वर्णन निम्नलिखित है–

1–वसन्ततिलका

जिस पद्य के प्रत्येक चरण में तगण, भगण, दो जगण, दो गुरु हों, उसे 'वसन्ततिलका' कहते हैं–

'उक्ता वसन्ततिलका तभजा जगौ गः।' (वृत्तरत्नाकर)

इस महाकाव्य के चतुर्थ सर्ग में माता कौशल्या द्वारा प्रातःकाल बालक राम को जगाने का प्रसंग वसन्ततिलका छन्द में ही प्राप्त होता है। उदाहरण देखिए–

बोधं प्रयाहि रघुनाथ! दयापयोधे!
स्वाधेर्भविष्यति ततः सकलस्य नाशः।
वेदा हृदाऽविरलमंजुलबाललीला
जालानुवर्णनधियः परितो भ्रमन्ति।।[1]

इसके अतिरिक्त राघवोल्लासमहाकाव्य के प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, सप्तम, एकादश तथा द्वादश सर्ग में भी वसन्ततिलका छन्द के उदाहरण प्राप्त होते हैं।

2–शार्दूलविक्रीडित

अद्वैतयति ने द्वादशसर्गात्मक अपने इस महाकाव्य में शार्दूलविक्रीडित छन्द का प्रयोग लगभग प्रत्येक सर्ग में किया है।

जिस पद्य के प्रति चरण में मगण, सगण, जगण, सगण, दो तगण और एक गुरु हो, तो उसे 'शार्दूलविक्रीडित' छन्द कहते हैं–

'सूर्याश्वैर्मसजस्ततः सगुरवः शार्दूलविक्रीडितम्।'(वृत्तरत्नाकर)

राघवोल्लास महाकाव्य प्रयुक्त उदाहरण–

तं नित्यं नमतद्विजा यतिवरं श्रीरामकृष्णाश्रमं
पूर्वस्मिन् विहितश्रमं विगमवाच्याचारयुज्याश्रमे।
तुर्यस्थं समलंकरोति मुनिना यं नग्नभालाग्निका
मुक्तेर्मण्डनमागलाच्च विमलं वाराणसीमण्डनम्।।[2]

राघवोल्लास महाकाव्य के तृतीय, चतुर्थ, अष्टम तथा द्वादश सर्ग में शार्दूलविक्रीडित छन्द का सर्वाधिक प्रयोग प्राप्त होता है।

3–मालिनी

'ननमयययुतेयं, मालिनी भोगिलोकैः।'(वृत्तरत्नाकर)

अर्थात् जिस पद्य के प्रत्येक चरण में क्रम से दो नगण, एक मगण, और दो यगण हों, उसे मालिनी छन्द कहते हैं। इसमें यति आठ और सात वर्णों पर होती है। सर्ग के अन्त में मालिनी छन्द का प्रयोग स्फुरणीय होता है। इस महाकाव्य के भी अष्टम सर्ग, नवम सर्ग तथा दशम सर्ग के अन्तिम श्लोक मालिनी छन्द में रचे गये हैं। जैसे नवम सर्ग के अन्त में–

सवितरि परिपाते पश्चिमाद्रीशमौलिं
कृतजलचुलदानः सान्ध्यकाले नृपालः।
निजहृदि विनिधाय प्राणतः प्रेमपात्रं
कमलमृदुगात्रं राममापत्सुनिद्राम्।।[3]

4–शिखरिणी

जिस पद्य के प्रत्येक चरण में क्रम से यगण, मगण, नगण, तगण, भगण, लघु और गुरु वर्ण हों, उसे शिखरिणी छन्द कहते हैं –

'रसै रुद्रैश्छिन्ना यमनसभलागः शिखरिणी।'(वृत्तरत्नाकर)

शिखरणी छन्द का प्रयोग राघवोल्लास महाकाव्य में सबसे कम हुआ है। तृतीय तथा द्वादश सर्ग में इस छन्द के एक–एक पद्य प्राप्त होते हैं।

5–अनुष्टुप

इस महाकाव्य के प्रत्येक सर्ग में कवि ने अनुष्टुप् छन्द का स्वछन्द प्रयोग किया है। क्षेमेन्द्र ने स्वयं इसके वर्ण्य विषय के क्षेत्र के व्यापकत्व का प्रतिपादन किया है–

आरम्भे सर्गबन्धस्य कथाविस्तरसंग्रहे।
शमोपदेशवृत्तान्ते सन्तः शंसन्त्यनुष्टुपम्।। सु0ति0 3.16

अद्वैतयति ने तो प्रथम सर्ग को छोड़कर शेष सम्पूर्ण एकादश सर्ग का प्रथम पद्य एक ही है जो अनुष्टुप में है–

जयन्ति रघुनाथस्य पदपंकजपांसवः।
मूकोऽपि वावदूकोऽयमद्वैतो यदुपाश्रयात्।।

6–उपजाति

इस महाकाव्य के सम्यक् पर्यालोचन से ज्ञात होता है कि उपजाति छन्द कवि को सर्वाधिक प्रिय है। सम्पूर्ण द्वादश सर्ग में इस इस छन्द का ही सबसे अधिक प्रयोग है। 1621 पद्यों वाले इस महाकाव्य के आधे से अधिक पद्य इसी छन्द में रचित हैं।

उपजाति का लक्षण–

अनन्तरोदीरितलक्ष्मभाजौ पादौ यदीयावुपजातयस्ताः।

इयं किलान्यास्वपि मिश्रितासु स्मरन्ति जातिष्विदमेव।।(वृत्तरत्नाकर)

उपजाति छन्द के कुछ उदाहरण देखिए–

पुरा जातं कान्ता स्मरमधुरवाणीरसयुतं
शनैः शुष्कं पश्चात् प्रखरतरवैराग्यरविणा।
तदायातं दूरादलघुविधिवायोः सुरनदी
मिदानीमावर्ते भ्रमति मम चित्तं तृणमिव।।[4]

तथा च–

जले गाङ्गे स्नानं तदनु हरपूजाविरचनं
ततो देवस्थाने क्षणमपि तदाख्यानकथनम्।
पुनः साकं सद्भिर्विकसितमुखाब्जं हसनं
यदि स्यान्मे नित्यं मधुमथन! लोके किमधिकम्।।[5]

7–इन्द्रवज्रा

स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ गः।(वृत्तरत्नाकर)

अर्थात् जिस पद्य के प्रति चरण में दो तगण, एक जगण और दो गुरु हों उसे इन्द्रवज्रा कहते हैं।

उपजाति के बाद इन्द्रवज्रा छन्द का ही सर्वाधिक प्रयोग राघवोल्लास महाकाव्य में हुआ है। इस महाकाव्य का वाग्देवी सरस्वती और भगवान् लम्बोदर का स्तुतिमूलक मङ्गलाचरण भी इन्द्रवज्रा छन्द में है। तद्यथा–

सिन्दूरपूरारुणवारणास्यो दास्योद्यतानां सकलार्थदाता।
विघ्नाब्धिमज्जज्जनतावलम्बो लम्बोदरो मे हृदये सदास्तु।।
वीणप्रवीणा सततं यदीया करद्वयी कान्तिमयी विभाति।
सा शुद्धवेषा कुमुदप्रकाशा भाषा ममाशा परिपूरणेऽस्तु।।[6]

8–रथोद्धता

जिस पद्य के प्रत्येक चरण में रगण, नगण, रगण, लघु और गुरु हों, उसे रथोद्धता कहते हैं–

रान्नराविह रथोद्धता लगौ। (वृत्तरत्नाकर)

तृतीय तथा चतुर्थ सर्ग में इस छन्द के उदाहरण मिलते हैं–

उदाहरणं यथा–

जाह्नवि! त्वयि करामि मज्जनं यज्जनं नयति वैष्णवं पदम्।
मातरस्मि सकलेषु सत्तमो यत्तमो भवभवं विनाशितम्।।[7]

9–द्रुतविलम्बित

'द्रुतविलम्बितमाह नभौ भरौ।'(वृत्तरत्नाकर)

अर्थात् जिस पद्य के प्रत्येक चरण में क्रमशः एक नगण, दो भगण और अन्त में रगण हो उसे द्रुतविलम्बित छन्द कहते हैं। यथा राघवोल्लासमहाकाव्य में–

कुशिकवंशमणिर्मुनिरब्रवीद् रघुपतिं भयलोलविलोचनः।
वसति रात्रिचरी त्विह ताटका सकलहा कलहावसरोऽधुना।।[8]

इस प्रकार स्पष्ट होता है कि राघवोल्लास महाकाव्य में अद्वैतयति ने छन्दों का निर्वाह छन्दशास्त्र के नियमानुसार ही किया है। इनकी कविता में छन्दों के कारण विशेष लयात्मकता प्रतीत होती है जो पाठक को आनन्दविभोर कर देती है।

सन्दर्भ सूची–

1. राघवोल्लासमहाकाव्य 4/47, डॉ0 रामकिशोर झा, गंगानाथ झा परिसर, इला0।(2011)
2. राघवो0 1/5, वही
3. राघवो0 9/77, वही
4. राघवो0 3/51, वही
5. राघवो0 12/141,वही
6. राघवो0 1/1,2, वही
7. राघवो0 3/54, वही
8. राघवो0 6/3, वही